ऋतु बसंत का सुप्रभात था,
मंद-मंद था अनिल बह रहा,
बालारुण की मृदु किरणें थीं,
अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे,
एक-दूसरे से विरहित हो,
अलग-अलग रहकर ही जिनको,
सारी रात बितानी होती,
निशाकाल के चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रन्दन, फिर उनमें,
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर,
प्रणय कलह छिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

अनिल – वायु। बालारुण – प्रातःकालीन सूर्य। मृदु – कोमल। स्वर्णाभ – सोने के समान चमकीले, ज्योतिमान। विरहित – अलग। निशा काल के – रात के। क्रंदन – रोदन। सरवर – सरोवर। यहाँ मानसरोवर से अभिप्राय है। शैवालों – सैवाल, पानी की सतह पर उत्पन्न घास। दरी – बिछौना, घाटी। प्रणय-कलह – प्रेम में अनबन, मान-मनोव्वल।

प्रसंग – प्रस्तुत कवितांश आधुनिक हिन्दी कविता में 'यायावर' और 'बाबा' के रूप में विख्यात नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' कविता से लिया गया है। कविता उनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'युगधारा' में संकलित है। यह प्रकृति विषयक कविता है, पर प्रतीकात्मकता लिए हुए है। कवि व्याख्येय अंश में वसंत ऋतु में बादलों के प्रभाव को चकवा-चकवी के स्नेह मिलन मान-मनोबल के जरिए अभिव्यक्त कर रहा है –

व्याख्या - वसंत की सुहावनी और मनभावन प्रातःकाल का समय था। चारों ओर मंद गति से सुगंधित पवन बह रही थी। यह दृश्य मन को मोहित कर रहा था। प्रातः कालीन सूर्य की कोमल किरणें सारे वातावरण पर छाकर सुनहली लालिमा बिखेर रही थी। चारों तरफ उन सुनहली किरणों तथा उज्ज्वल पर्वतों पर शिखर जगमगा रहे थे। प्रातःकाल का संपूर्ण वासंती वैभव प्रकृति को मोहक बना रहा था। दैववश जिन चकवा-चकवी को रात का अभिशाप काल एक-दूसरे से विलग होकर व्यतीत करना पड़ता है, प्रातःकाल के कारण उन चकवा-चकवी का क्रंदन अब बंद हो चुका था। इस मनोहर मानसरोवर के जल की सतह पर उग आई हर सैवाल में प्रेमपूर्ण कलह करने अथवा झगड़ते देखा है, मान-मनौव्वल करते हुए देखा है। इस तरह मैंने प्रणय के सुंदर सलौने बादलों को घिरते देखने का अनुभव किया है।

काव्य-सौंदर्य - 1. नागार्जुन संस्कृत काव्यधारा से प्रभावित रहे हैं इस काव्यांश में भाषा व प्रकृति चित्रण का यह प्रभाव देखा जा सकता है।

2. मंद-मंद पद में वीप्सा अलंकार है।

3 'अमल-धवल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

4 अलग-अलग में भी वीप्सा अलंकार ही है।

5 'हरी-दरी पर' में रूपात्मक योजना है।

6 प्रातः कालीन प्राकृतिक शोभा का दृश्य बिंब एकदम अनुभूत-सा है।

7 'चकवा-चकवी' का रात में बिछड़ना और प्रभात में फिर मिलना' में परंपरागत कवि उक्ति और काव्य रूढ़ि

8 अभिजात शैली है।

9 कथात्मक है।

10 सुप्रभात सु-उपसर्ग + प्रभात

11 भाषा संस्कृतनिष्ठ है लेकिन सरस एवं कोमलकांत शब्दावली का संयोजन है।